66

पौलुस और उसके मित्र

(16:1-16, 21-23)

किसी ने कहा है कि किसी के बहुत मित्र कभी नहीं हो सकते और हम में से अधिकतर लोग उससे सहमत होंगे।[1] नीतिवचन में सुलेमान ने लिखा है: ''मित्र सब समयों में प्रेम रखता है'' (17:17क); ''ऐसा मित्र होता है, जो भाई से भी अधिक मिला रहता है'' (18:24ख)। प्रसिद्ध प्रचारक मार्शल कीबल कहा करते थे, ''हो सकता है कि मेरे पास एक मिलियन डॉलर न हों, परन्तु मेरे पास एक मिलियन मित्र हैं।'' फिर वह खीसें निकालते हुए कहते, ''उन मिलियन मित्रों में से हर एक आवश्यकता पड़ने पर मुझे एक डॉलर देगा।''

पौलुस के शत्रु थे, जो उसका और उसकी सेवकाई का विरोध करते थे (देखें रोमियों 3:8; 15:31क; 2 कुरिन्थियों 11:26; फिलिप्पियों 3:18)। परन्तु उसके मित्र भी थे (देखें प्रेरितों 19:31; 24:23; 27:3) और वह उन में से हर एक मित्र के लिए धन्यवाद देता था। रोमियों 16 में पैंतीस लोगों का नाम है; जिनमें से अधिकतर पौलुस के मित्र थे। उनमें से कुछ एक को हम जानते हैं, परन्तु अधिकतर को केवल इसलिए जानते हैं क्योंकि उनका नाम इस वचन में है। हम उन्हें जानते हों या न, परन्तु पौलुस के लिए वे सभी महत्वपूर्ण थे।

किंख्रिया में एक मित्र (16:1, 2)

अध्याय 16 का आरम्भ प्रशंसा की एक बात के साथ होता है:

> मैं तुम से फीबे की, जो हमारी बहिन[2] और किंख्रिया की कलीसिया[3] की सेविका है, विनती करता हूं। कि तुम जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उस को तुम से प्रयोजन हो, उस की सहायता करो; क्योंकि वह भी बहुतों की वरन मेरी भी उपकारिणी हुई है (आयतें 1, 2)।

पौलुस के समय में परिचय और सिफारिशी पत्र दिया जाना आम बात थी (देखें प्रेरितों 18:27; 2 कुरिन्थियों 3:1; 8:18-24)। यह पत्र मसीही लोगों को झूठे शिक्षकों से बचाते थे। जो उन्हें गुमराह कर सकते थे और उन धोखेबाजों से जो उनकी मेहमाननवाज़ी का अनुचित लाभ उठाने की कोशिश कर सकते थे।

एक जिसकी तारीफ पौलुस द्वारा की गई, वह ''फीबे ... किंख्रिया की सेविका है।'' किंख्रिया कुरिन्थुस के पूर्व की ओर छह-सात मील बन्दरगाह नगर था[4] (''पौलुस द्वारा रोमियों की पत्री लिखने के समय रोमी साम्राज्य'' मानचित्र देखें)। वहां पर कलीसिया सम्भवतया कुरिन्थुस से आए मसीही लोगों के द्वारा स्थापित की गई थी। पौलुस बाद में कुरिन्थुस से यरूशलेम जाने के समय किंख्रिया में से होकर गया था (देखें प्रेरितों 18:18)।

पत्र ले जाने वाली ?

पौलुस ने रोम के मसीही लोगों से फीबे का परिचय इसलिए करवाया, क्योंकि उन्होंने उनके पास उसका पत्र ले जाना था। उस ज़माने में व्यक्तिगत डाक के लिए डाक सेवा नहीं होती थी।[5] किसी व्यक्ति द्वारा पत्र लिखने के बाद उसके लिए उसे अपेक्षित गन्तव्य तक पहुंचाने के लिए वहां जाने वाले किसी व्यक्ति को ढूंढ़ना पड़ा था, यानी ऐसे व्यक्ति को जिसके हाथ में वह उस दस्तावेज़ को देने के लिए तैयार हो। प्राप्तकर्त्ता को ढूंढ़ने के मौखिक और लिखित निर्देश देने के बाद,[6] लेखक पत्र ले जाने वाले के वहां से निकलने को ध्यान से देखता, उसे चिन्ता रहती थी कि उसका पत्र उसी व्यक्ति को मिलेगा या नहीं जिसके लिए लिखा गया था।

फीबे के पौलुस का पत्र लेकर रोम की कई मील यात्रा पर विचार करने के लिए एक पल निकालें। विचार करें कि उसका काम कितना महत्वपूर्ण था और पत्र के रोम जाने में उसके रास्ते में कितनी रुकावटें आ सकती थीं। मुझे यकीन है कि परमेश्वर इस काम को देख रहा था; फिर भी फीबे की कितनी बड़ी ज़िम्मेदारी थी! इससे पहले उसने कलीसिया की जो भी सहायता की थी, वह रोम में पौलुस की इस रचना को सुरक्षित ले जाने की तुलना में कुछ भी नहीं थी।

एक सहायक

कालांतर में फीबे ने अपने आपको जिम्मेदार व्यक्ति साबित किया था। पौलुस ने उसे ''कलीसिया की सेविका'' और ''बहुतों की वरन मेरी भी उपकार करने वाली'' कहा। अनुवादित शब्द ''उपकार करने वाली'' ''सहायक'' के लिए सामान्य शब्द नहीं है। यह *prostatis* है जिसका मूल अर्थ है ''जो सामने खड़ा होता है'' (*proistemi* से *pro* [''पूर्व''] के साथ *histemi* [''खड़े होना'']) और इसका अर्थ ''संरक्षक, रक्षक हो सकता है।[7]'' शायद फीबे साधन सम्पन्न स्त्री थी जो दूसरों की सहायता के लिए अपने संसाधनों का इस्तेमाल उदारता से करती थी।

पौलुस ने रोम के मसीही लोगों से सहायक की सहायता करने को कहा। उसने कहा, ''जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो।'' लियोन मौरिस ने लिखा है, ''किसी को 'प्रभु में' ग्रहण करने का अर्थ उस व्यक्ति को घर में स्वीकार करने से कहीं अधिक है; एक बात याद रखने वाली है कि जो कुछ मसीही लोग करते हैं वह मसीह में करते हैं।''[8] फिलिप्स के अनुवाद में ''उसका मसीही स्वागत करो'' है।

पौलुस ने अपने पाठकों से कहा कि ''जिस किसी बात में उसको तुम्हारी आवश्यकता हो, उसकी सहायता करो।'' ''सहायता करो'' के लिए शब्द (*paristemi*) का मूल अर्थ है ''के साथ खड़े होना'' (*para* [''साथ''] जमा *histemi* [''खड़े होना'']) । आज हम ऐसे ही वाक्यांश किसी के साथ ''खड़े होना'' का इस्तेमाल करते हैं जिसका अर्थ है कि आप उस व्यक्ति को छोड़ें नहीं, बल्कि जब तक आवश्यकता हो उसकी सहायता करें। हम नहीं जानते कि फीबे रोम में क्यों जा रही थी। हो सकता है कि वह मित्रों से मिलने जा रही हो, या शायद कारोबार के सिलसिले में जा रही हो।[9] उसे अपने किसी कानूनी मसले के निपटारे के लिए रोमी अधिकारियों के पास जाना हो सकता है।[10] उसके जाने का कारण जो भी हो, उसे सहायता की आवश्यकता होगी। रोम एक बड़ा नगर था, जो किसी आगंतुक के लिए बहुत प्रभावित करने वाला हो सकता था। फीबे को

नगर में रास्ता बताने के लिए सहायता की आवश्यकता हो सकती है। उसे रहने की जगह की आवश्यकता हो सकती थी। पौलुस ने रोम में अपने मित्रों से किंख्रिया की अपनी मित्र की *जो भी* आवश्यकता हो उसकी सहायता करने को कहा।

''डीकनैस''?

अभिवादनों की पौलुस की सूची पर जाने से पहले विवाद की एक बात पर विचार करना आवश्यक है कि फीबे ''किंख्रिया की कलीसिया की सेविका'' *अधिकारिक* या *अनाधिकारिक* थी। ''सेविका'' का अनुवाद *diakonos* से किया गया है[11] जो वही शब्द है जिससे हमें ''डीकन'' शब्द मिला है। इसी लिए कुछ लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि आरम्भिक कलीसिया में एक पद था जिसे ''डीकनैस का पद'' कहते थे और फीबे किंख्रिया की मण्डली में इसी पद पर थी (देखें RSV; NEB)।

रोमियों 13 का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि [*diakonos*] का इस्तेमाल डीकन या सामान्य अर्थ में किसी भी सेवक के लिए करने के लिए विशेष अर्थ में किया जा सकता है। रोमियों 13:4 में सरकारी अधिकारी को दो बार ''परमेश्वर का सेवक [*diakonos*]'' कहा गया है। यीशु को सेवक (*diakonos*) कहा जाता है (रोमियों 15:8; देखें मरकुस 10:45) और उसने अपने हर अनुयायी को सेवक (*diakonos*) बनने के लिए प्रोत्साहित किया (मत्ती 20:26)।

किसी वचन में यह कैसे बताया जा सकता है कि *diakonos* का विशेष अर्थ में है या सामान्य अर्थ में? संदर्भ को देखकर। क्या रोमियों 16:1, 2 के संदर्भ में ऐसी कोई बात है जो हमें यह विश्वास दिलाती हो कि इसमें विशेष इस्तेमाल की इच्छा थी? यह नहीं कि मैं देख सकता हूं।[12] कलीसिया में ''डीकनैस का पद'' का प्रमाण अपर्याप्त है: यह वचन और 1 तीमुथियुस 3:11 में ''स्त्रियों/पत्नियों'' का अस्पष्ट हवाला।[13] नये नियम में यह साबित करने के लिए कि कलीसिया में ''डीकनैस के पद'' के रूप में जाना जाने वाला कोई आधिकारिक पद था, अपर्याप्त प्रमाण है।

यह कहने के बाद मैं यह कहने में फुर्ती करता हूं कि सम्भवतया हर मण्डली में ''डीकनैसों'' की बहुतायत की आशीष है। मैं इस शब्द का इस्तेमाल सामान्य अर्थ में परमेश्वर की भक्त सेविकाओं की बड़ी सेना के लिए करता हूं, जो असंख्य कामों के पीछे, जिनमें अधिकतर उनका धन्यवाद नहीं किया जाता, मण्डली को कार्य करने के योग्य बनाते हैं। देखता हूं। इन धन्य स्त्रियों के बिना जो प्रभु व दूसरों की सेवा करती हैं कलीसिया कहां होगी?

शायद इस पर ज़ोर दिया जाना चाहिए कि चाहे *diakonos* का इस्तेमाल विशेष अर्थ में किया गया है, तौभी इसका अर्थ अधिकारात्मक स्थिति नहीं, बल्कि *सेवा* की भूमिका है। जहां तक कलीसिया के इतिहास की बात है, डीकनैस के पद का संकेत तीसरी शताब्दी तक नहीं मिलता (धर्मत्याग आरम्भ होने के बाद भी)। जैक पी. लूईस ने तीसरी शताब्दी के अन्त के एक दस्तावेज़ का हवाला दिया है, जिसमें कहा गया है ''डीकनैसें जो स्त्रियों के बपतिस्मे में सहायता करती हैं, अन्यजातियों के घरों में जाती हैं जहां विश्वास करने वाली स्त्रियां हैं, बीमारों के पास जाती हैं, उनकी सेवा करती और उन्हें नहलाती हैं।''[14] लूईस कैंडडिली ने टिप्पणी की है, ''ऐसे काम करने से किसी प्रकार डीकनैसों की आधुनिक दौड़ संतुष्ट नहीं होगी।''[15] यदि मण्डली के अगुवे कुछ स्त्रियों को ''डीकनैस'' बना भी दें, तौभी 1 तीमुथियुस की 2:12 की पाबंदी लागू

रहेगी। उन्हें पुरुषों पर कोई अधिकार नहीं हो सकता।

इस विवाद से आप यह न भूल जाएं कि पौलुस के लिए फीबे का क्या महत्व था। NEB में है ''वह स्वयं बहुतों के लिए, जिसमें मैं भी हूं एक अच्छी मित्र रही है।'' वह ऐसी मित्र थी जिसे पौलुस ने रोम में मसीही लोगों के नाम अपना पत्र दिया होगा।

रोम में मित्र (16:3-16क)

फीबे की सराहना करने के बाद पौलुस ने लोगों की बड़ी संख्या को अभिवादन भेजा। और आगे बढ़ने से पहले हमें 3 से 16 आयतें ऊंचे स्वर से पढ़ने की कोशिश करनी चाहिए। आपको उसमें दिए कुछ नामों का उच्चारण कठिन लगता है ? हाल ही की एक आराधना सेवा में, एक भाई से रोमियों 16:3-16 रविवार प्रात: के वचन पाठ के रूप में पढ़ने को कहा गया। उसे नाम लेने में कठिनाई हो रही थी। उसके पढ़ने के बाद, सॉन्ग लीडर ने मुस्कराते हुए कहा कि पढ़ने वाले को उसके प्रयास के लिए शाबाश मिलनी चाहिए। यदि यह कोई दिलासा है तो पहली सदी के मसीही लोगों को आज की कलीसिया के कुछ लोगों के नामों का उच्चारण करना कठिन लगता होगा।

पौलुस के पत्रों में ऐसे नामों का होना असामान्य बात है। कइयों ने तो निर्णय लिया है कि ऐसी जगह पर जहां पौलुस कभी गया नहीं इतने सारे लोगों को जानना सम्भव नहीं था। इस कारण, वे कहते हैं कि अध्याय 16 अवश्य आरम्भ में उस मण्डली के लिए होगा जहां पौलुस ने पहले परिश्रम किया था, जैसे इफिसुस की मण्डली थी। इस तर्क में कई कमियां हैं। पहले तो यह कि ऐसा कोई दस्तावेज़ी प्रमाण नहीं है कि इन अभिवादनों को कभी रोमियों की पुस्तक से उनकी जगह से हटाया गया था।[16] दूसरा, पौलुस कई जगहों में गया था और कई लोगों की रोम जाने की इच्छा थी इसलिए यह सोचना तर्कहीन नहीं है कि उसे उस नगर में पहुंचने वाले कई लोगों की पहचान थी।

तीसरा, उस नगर के बजाय जहां पौलुस गया *था* उस नगर के लोगों के नाम बताने में पौलुस ने विशेष ध्यान दिया होगा, जहां वह *नहीं* गया था।[17] यदि मुझे किसी कलीसिया के नाम पत्र लिखना हो जहां मैंने कभी प्रचार नहीं किया मुझे उस मण्डली के कुछ लोगों का पता हो, तो मैं विशेष रूप से उन लोगों का नाम लूंगा। यदि मुझे किसी ऐसी मण्डली को लिखना हो जहां मैंने काम किया *था,* तो मैं इस डर से कि यदि किसी का नाम रह गया तो इससे उसे दुख होगा, किसी का नाम शामिल करने का साहस नहीं करूंगा।

फिर से नामों की सूची को देखें। ऐसी सूची को नज़रअंदाज करना अच्छा लग सकता है (जैसे वंशावलियों को नज़रअंदाज़ करना), परन्तु बाइबल की सूचियों में से खोजना आम तौर पर अनापेक्षित भण्डार दिलाने वाला होता है। एमेल ब्रुनर ने रोमियों 16 को '' 'नये नियम के सबसे निर्देशात्मक अध्यायों में से' '' कहा है ''क्योंकि यह कलीसिया में प्रेम के निजी सम्बन्धों को प्रोत्साहित करता है।''[18] हम संक्षेप में अध्याय 16 के नामों की समीक्षा करते हैं। अन्त में मैं अपनी समीक्षा से कुछ सबक बताऊंगा।

प्रिसका और अक्विला (आयतें 3-5क)

यह मानते हुए कि फीबे को पौलुस का पत्र दिया गया था और इसे जिसको दिया जाना था

उसे देने के विषय में समझाया गया था ? रोम की कलीसिया का कोई पता या पोस्ट बॉक्स नहीं था। पत्र एक व्यक्ति या व्यक्तियों के पास ले जाया जाना था, परन्तु वह व्यक्ति कौन था ? इस बात की बड़ी सम्भावना है कि यह पत्र पौलुस के अभिवादन के आरम्भ में आए दम्पत्ति को दिया गया था। यह दम्पत्ति जो पौलुस के घनिष्ठ मित्र थे, ने रोम के अन्य मसीही लोगों के साथ इसको बांटने की आनन्दपूर्वक जिम्मेमदारी होनी थी।

यह दम्पत्ति कौन था ? सूची का आरम्भ होता है, ''प्रिसका और अक्विला को जो यीशु में मेरे सहकर्मी हैं, नमस्कार'' (आयत 3)। लूका ने उन्हें ''प्रिसकिल्ला और अक्विला कहा'' (देखें प्रेतिरों 18:26) परन्तु पौलुस ने उन्हें अधिक औपचारिक रूप से ''प्रिसका और अक्विला'' कहा। (''प्रिसकिल्ला'' ''प्रिसका'' का लघु रूप ''प्रिसका'' था।) लोग हैरान होते हैं कि पुरुष प्रधान समाज में पौलुस ने प्रिसकिल्ला का नाम पहले क्यों लिया।[19] यह अनुमान लगाया गया है कि प्रिसकिल्ला शाही परिवार से थी जबकि अक्विला की पृष्ठभमि साधारण थी, या यह कि प्रिसकिल्ला का व्यक्तित्व रौबदार था। हम पक्का नहीं कह सकते कि क्यों, परन्तु नाम पहले दिया जाना इस बात का अतिरिक्त प्रमाण है कि पौलुस के मन में स्त्रियों के लिए सम्मान था।

सम्राट कलौदियुस द्वारा रोम से निकाले जाने के बाद पौलुस अक्विला और प्रिसकिल्ला से पौलुस ही मिला (प्रेरितों 18:1-3)।[20] कुरिन्थुस से जाने के समय पौलुस के साथ इफिसुस में प्रिसकिल्ला और अक्विला गए थे। वे उस नगर में ठहरे जहां से वह आगे गया (आयतें 18-21, 24-28)। किसी समय यह दम्पत्ति रोम में लौट आया, सम्भवतया 55 ईस्वी में क्लौदियुस की मृत्यु के बाद, जिस कारण उसका आदेश रद्द हो गया।

पौलुस ने प्रिसका और अक्विला को कहा कि वे ''यीशु में मेरा सहकर्मी हैं, उन्होंने मेरे प्राण के लिए अपना ही सिर दे रखा था'' (रोमियों 16:3ख, 4क)। किस अवसर पर प्रिसका और अक्विला ने पौलुस के लिए अपनी जान पर खेला था ? क्या यह इफसुस में हुआ था ? उस नगर में पौलुस ने कई खतरे उठाए थे (देखें 1 कुरिन्थियों 15:32; प्रेरितों 19:23, 30, 31)। हमें विस्तार से तो पता नहीं है परन्तु शायद यह बाइबल की कई रोमांचकारी अनकही कहानियों में से एक है। परन्तु स्पष्टतया पहली सदी में यह साहसिक कार्य सबको मालूम था। पौलुस ने आगे कहा, ''केवल मैं ही नहीं, वरन अन्यजातियों की सारी कलीसियाएं भी उनका धन्यवाद करती हैं'' (रोमियों 16:4ख)। कहने का अर्थ यह कि यदि अक्विला और प्रिसकिल्ला ने अपनी जान जोखिम में न डाली होती तो पौलुस मर चुका होता, और बड़ी बुरी तरह से और समय से पूर्व अन्यजातियों में उसकी सेवकाई खत्म हो गई होती। इस बात को समझते हुए अन्यजातियों की सब मण्डलियों ने इस दोहरे साहसिक कार्य के लिए धन्यवाद दिया।

पौलुस ने इन दोनों मित्रों को अभिवादन भेजा और कहा, ''और उस कलीसिया को भी नमस्कार जो उन के घर में है'' (आयत 5क)। कई लोग ''उस कलीसिया को जो उनके घर में है'' वाक्यांश से चकित होते हैं। ''कलीसिया'' *ekklesia* लोगों की वह मण्डली है जिसे मसीह के लहू द्वारा बचाया गया है (देखें इफिसियों 5:23, 25)। किसी जगह की कलीसिया उस क्षेत्र में खून खरीदे मसीही लोगों से बनती है। इन्हें आराधना करने के लिए इकट्ठे होने का निर्देश दिया जाता है (देखें इब्रानियों 10:25), परन्तु वे *कहां* इकट्ठा होते हैं इस बात का इतना महत्व नहीं है। पहली सदी की मण्डलियां मिलने की कई जगहों में इकट्ठा होती थीं: सार्वजनिक स्थानों में (जैसे

''सुलेमान का ओसारा''[21] [प्रेरितों 5:12]), बहुमंजिला इमारतें[22] (प्रेरितों 20:9) और निजी घरों में (कुलुस्सियों 4:15; फिलेमोन 2)। जब कोई समूह छोटा हो तो इकट्ठा होने के लिए घर सुविधाजनक स्थान हो सकता है। जब हम सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में गए तो मसीह की कई छोटी-छोटी कलीसियाएं उस बड़े नगर के विभिन्न भागों में सदस्यों के घरों में इकट्ठा होती थीं। कर्मचारियों की हमारी अपनी टीम तब तक घरों में इकट्ठा होती थी, जब तक हमें किराये पर एक कमरा नहीं मिल गया।

अकविल्ला और प्रिसकिल्ला आराधना के स्थान के रूप में अपना घर खोल दिया करते थे। इफिसुस में उनके घर में एक कलीसिया मिलती थी (1 कुरिन्थियों 16:19) और अब रोम में उनके निवास स्थान में एक कलीसिया मिलती थी। डेल हार्टमैन ने कहा है, ''अकविल्ला और प्रिसकिल्ला जहां भी गए थे, उन्होंने या तो कलीसिया को मज़बूत किया या जहां कलीसिया नहीं थी वहां उसे आरम्भ किया।''[23]

14 और 15 आयतों पर आगे नज़र मारें। उन आयतों में ''उनके साथ'' वाक्यांश से संकेत मिल सकता है कि अकविल्ला और प्रिसकिल्ला के घरों में मिलने वाली कलीसिया के अलावा उस नगर में कम से कम दो और घरों में मिलने वाली कलीसियाएं थीं। रोम जितना बड़ा नगर था, जिसमें सार्वजनिक यातायात का साधन नहीं था, महानगर के विभिन्न भागों में कई मण्डलियां होनी चाहिए थीं।

''घरों में कलीसियाओं'' के बारे में सबसे महत्वपूर्ण कही जाने वाली बात शायद यह है कि संक्षेप में वे ''सार्वजनिक सभा स्थल वाली कलीसियाओं'' या ''किराए के कमरे वाली कलीसियाओं'' से भिन्न नहीं हैं। हर मण्डली स्तवतन्त्र (अपना प्रबन्ध आप करने वाली) कलीसिया है जो अपने आप में पूर्ण है और किसी प्रकार से किसी बड़ी कलीसिया या क्षेत्रीय कलीसिया का भाग नहीं है। यदि ''घरों की कलीसियाएं'' चाहें तो वे क्षेत्र की अन्य मण्डलियों के साथ कभी-कभी मिल सकती हैं; परन्तु यदि वे एक दूसरे के साथ मिलती हैं तो यह कई स्वतन्त्र मण्डलियों का इकट्ठ होगा न कि एक बड़ी मण्डली के भागों का इकट्ठे होना।

ट्रुथ फ़ॉर टुडे के कई पाठक अन्य मसीही लोगों से अलग हैं। इन्हें यह जानकर दिलेरी मिलनी चाहिए कि किसी घर में मिलने वाली कलीसिया उतनी ही वचन के अनुसार है जितनी बहुत बड़े भवन में मिलने वाली कलीसिया। बहुत से लोग जो इस पाठ का अध्ययन करेंगे इस समय संसार के विभिन्न देशों में अपने घरों में मिल रहे हैं उनके लिए मैं वैसे ही सलाम भेजता हूं जैसे रोम में घर में इकट्ठा होने वाली कलीसिया के नाम पौलुस ने भेजा था।

यदि आपके निकट प्रभु की कोई कलीसिया इकट्ठा नहीं होती है तो मैं आपसे आग्रह करूंगा कि आप अपने घर में बाइबल अध्ययन तथा आराधना सेवा आरम्भ करें और दूसरों को इसके बारे में बताएं। फिर प्रार्थना करें कि परमेश्वर इसे बढ़ाए (1 कुरिन्थियों 3:7; KJV)।[24]

इपैनितुस (आयत 5ख, ग)

इस आयत में अगला सलाम इपैनितुस को है। पौलुस ने उसका परिचय ''मसीह के लिए आसिया का पहिला फल है''[25] के रूप में कराया (आयत 5ग)। इपैनितुस को पौलुस ने इफिसुस में पहली बार आने के समय परिवर्तित किया होगा (प्रेरितों 18:19, 20)। पौलुस के इफिसुस से

लौटने से पहले उसे अक्विल्ला और प्रिसकिल्ला ने सिखाया होगा (प्रेरितों 18:18, 19, 24-26)। शायद वह इफिसुस में वापस आने के समय पौलुस द्वारा दोबारा डुबकी देने वाले बारह लोगों में पहला था (प्रेरितों 19:1-7)। यूनानी धर्मशास्त्र में मूलतया, ''पहला फल'' है (देखें KJV)। किसी नये काम के पहले फल बहुत कीमती होते हैं! जिम मैक्विगन ने लिखा है, ''बहुत सा प्रचार, बहुत सी प्रार्थना, बहुत सा अकेलापन और फिर इपैनितुस आता है! बच्चे को तरसते दम्पत्ति के पहलौठे बच्चे की तरह।''[26] मैं ऑस्ट्रेलिया में अपनी टीम के पहले फल एलन टोटमैन परिवार को कभी नहीं भूलूंगा। उस परिवार का बेटा लैस टोटमैन आज सिडनी क्षेत्र में सुसमाचार सुनाने का काम कर रहा है।

कुछ लोगों का मानना है कि यह तथ्य कि प्रिसकिल्ला, अक्विला और इपैनितुस सब लोग आसिया से आए थे और हमारे वचन पाठ में उनके नामों की निकटता इस बात का संकेत है कि इपैनितुस इस दम्पत्ति के साथ रोम में गया और उनके घर में मिलने वाली कलीसिया का भाग था। इपैनितुस के बारे में हम अधिक नहीं जानते, परन्तु पौलुस ने उसे ''मेरा प्रिय'' कहा (रोमियों 16:5ख)। इस वचन में पौलुस ने कई लोगों को ''मेरे प्रिय'' कहा (आयतें 5, 8, 9; देखें आयत 12) यानी उसके मन में हर एक के लिए विशेष स्थान था।

मरियम (आयत 6)

फिर पौलुस ने कहा, ''मरियम को नमस्कार'' (आयत 6), एक प्रचलित्त नाम था; नये नियम में कम से कम छह अलग-अलग लोगों के नाम का उल्लेख है। इस मरियम का परिचय ''जिस ने तुम्हारे लिए बहुत परिश्रम किया''[27] के रूप में किया गया है (आयत 6ख)। पौलुस ने सूची में दिए कई लोगों को प्रभु के लिए काम करने वाले बताया (आयतें 6, 9, 12)। पौलुस ने लिखा, ''सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है'' (1 कुरिन्थियों 15:58)।

अन्द्रुनीकुस और यूनियास

फिर पौलुस ने कहा, ''अन्द्रुनीकुस और यूनियास को नमस्कार'' (आयत 7)। अनुवादित शब्द यूनियास पुलिंग या स्त्रीलिंग दोनों में से कोई भी हो सकता है। KJV में स्त्रीलिंग यूनिया है।[28] हमें नहीं मालूम कि पौलुस दो पुरुषों की बात कर रहा था या एक पुरुष और उसकी पत्नी की या एक पुरुष और उसकी बहन की।[29] उनका जो भी सम्बन्ध रहा हो पौलुस को उनके बारे में चार बातें कहनी थी।

पहली, उसने उन्हें ''मेरे कुटुम्बी'' कहा (आयत 7ख)। ये वे पहले छह लोग हैं जिन्हें अध्याय 16 में पौलुस के कुटुम्बी बताया गया है (आयतें 7, 11, 21)। ''कुटुम्बी'' का अनुवाद *sungenes* के बहुवचन के रूप से किया गया है। *Sungenes* का अर्थ ''पारिवारिक सम्बन्ध'' हो सकता है; NIV ''रिश्तेदार'' है। इस शब्द का अर्थ ''गोत्र या जाति सम्बन्धी'' भी हो सकता है।[30] NEV में ''मेरे साथी देशवासी'' है। अध्याय 16 में पौलुस ने इस शब्द का इस्तेमाल सम्भवतया वैसे ही किया जैसे उसने अध्याय 9 में किया: ''शरीर के अनुसार मेरे सम्बन्धी'' (आयत 3) यानी उसके साथी यहूदी।

फिर पौलुस ने ''मेरे साथ कैद हुए'' दो लोग कहा (16:7ग)। पौलुस कई बार कैद हुआ था (2 कुरिन्थियों 11:23; KJV)। उनमें से एक बार अन्द्रुनीकुस और यूनियास को भी मसीह के शत्रुओं ने गिरफ्तार किया होगा। एक सम्भावना यह भी है कि पौलुस की तरह वे कैद हुए थे परन्तु आवश्यक नहीं कि उसी समय और स्थान पर।

पौलुस ने अन्द्रुनीकुस और यूनियास को ''प्रेरितों में नामी'' भी बताया (रोमियों 16:7घ)। यदि ''प्रेरितों'' (*apostolos* ['की ओर से भेजा'' गया] का बहुवचन) का अर्थ यीशु द्वारा व्यक्तिगत रूप से ठहराए गए वे विशेष लोग हैं तो इस वाक्यांश का अर्थ है कि प्रेरित इन दोनों को नामी मानते थे। ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में कहा गया है कि वे ''प्रेरितों में प्रसिद्ध'' थे। CEV में ''वह प्रेरितों में बहुत सम्मानित'' है। यदि प्रेरितों का इस्तेमाल किसी मण्डली द्वारा ''भेजे गए'' के सामान्य अर्थ में (मिशनरियों के रूप में) है तो इस शब्द का अर्थ है कि अन्द्रुनीकुस और यूनियास ने ज़बर्दस्त मिशन कार्य किया था।

अन्त में पौलुस ने कहा कि दोनों ''मुझसे पहले मसीह में हुए थे'' (आयत 7ङ)। यानी उन्हें उससे पहले मसीह में बपतिस्मा दिया गया था (रोमियों 6:3, 4)। इससे यह संकेत मिल सकता है कि वे पौलुस द्वारा यरूशलेम में कलीसिया को सताने से पहले मसीही बन गए थे (प्रेरितों 8:1-4)।

अम्पलियातुस (आयत 8)

पौलुस की सूची में अगला व्यक्ति अम्पलियातुस था: ''अम्पलियातुस को, जो प्रभु में मेरा प्रिय है, नमस्कार'' (आयत 8)। एफ. एफ. ब्रूस ने लिखा, ''यह नाम उस काल के रोमी शिलालेखों में आम है और शाही परिवार के सदस्यों द्वारा रखा जाना बार बार मिलता है।''[31] विद्वानों ने पहली सदी के सम्राट के घराने से जुड़े नामों के साथ रोमियों 16 में दिए नामों का मिलान किया है। ''उन चौंतीस नामों में से [आयतें 3-16 में मिलने वाले], तेरह उन शिलालेखों या दस्तावेज़ों में मिलतेम हैं, जिनका सम्बन्ध रोम में सम्राट के महल से है।''[32] जे. बी. लाइटफुट ने निष्कर्ष निकाला कि रोमियों 16 की सूची में ''कैसर के घराने'' के कम से कम कुछ ''पवित्र लोग'' अवश्य होंगे जिनका उल्लेख बाद में फिलिप्पियों 4:22 में किया गया।[33] यदि ऐसा है तो इनमें से कई उस घराने के दास या सेवक होंगे।

पौलुस ने अम्पलियातुस को ''प्रभु में मेरा प्रिय'' कहा। NEB है ''प्रभु की संगति में मेरा प्रिय मित्र।''

उरबानुस और इस्तखुस (आयत 9)

फिर पौलुस ने कहा, ''उरबानुस को, जो मसीह में हमारा सहकर्मी है, और मेरे प्रिय इस्तखुस को नमस्कार'' (आयत 9)। ''उरबानुस'' हमारे शब्द ''अरबन'' के परिवार का है जिसका अर्थ है ''नगर का।'' ''इस्तखुस'' का मूल अर्थ है (अनाज की बाली[34]) कई लोग चकित होते हैं कि ''अनाज की बाली'' की अभिव्यक्ति का अर्थ ''खेत से'' हो सकता है। (जब मैं बड़ा हो रहा था तो देहात में रहने वाले व्यक्ति को आम तौर पर ''गवार'' कहा जाता था।) शायद उनके मित्र इन दोनों को ''शहरी लड़का'' और ''गांव का लड़का'' कहते थे।

अपिल्लेस (आयत 10क)

उरबानुस और इस्तखुस का नाम लेने के बाद पौलुस ने कहा, ''अपिल्लेस को जो मसीह में खरा निकला'' (आयत 10क)। ''खरा निकला'' (*dokimos*) का अर्थ है कि जो परीक्षा में सफल हो गया।[35] अपने मसीही जीवन में किसी समय, अपिल्लेस को अपने विश्वास की परीक्षा देनी पड़ी थी। प्रभु की सहायता से उसने उस परीक्षा को पास कर लिया था। इसलिए वह ''मसीह में खरा निकला।''

अरिस्तुबुलुस नरकिस्सुस (आयत 10ख, 11)

अगले तीन नामों का सम्बन्ध शाही घराने से हो सकता है। इन तीनों में पहला अरिस्तुबुलुस है। पौलुस ने कहा, ''अरिस्तुबुलुस के घराने को नमस्कार'' (आयत 10ख)। ''लाइट फुट उसका परिचय हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम के भाई से कराने का सुझाव देता है, जो रोम में एक आम नागरिक के रूप में रहता था और अपने भाई की तरह, कलाउदियुस का मित्र था।''[36] तीनों में अन्तिम नरकिस्सुस है: ''नरकिस्सुस के घराने के जो लोग प्रभु में हैं, उन को नमस्कार।'' (आयत 11ख)। कई लोगों ने ''इस नरकिस्सुस को तिबरियुस कलादियुस नरकिस्सुस बताया है जो सम्राट तिबरियुस का एक धनी मुक्त दास था।''[37] जिसका कलादियुस के अधीन खासा प्रभाव था।[38]

ध्यान दें कि नमस्कार अरिस्तगुलुस और नरकिस्सुस को नहीं किया गया, बल्कि उनके घराने के लोगों को किया गया है, जिनमें दास और सेवक शामिल होंगे। यदि ये दोनों मर भी गए होंगे तौभी इनके दासों को अभी भी उनके घराने से या के माना जाता होगा। अरिस्तुबुलुस और नरकिस्सुस जो भी थे, उनके घराने के कम से कम कुछ लोग मसीही थे और पौलुस ने उन्हीं को सलाम भेजा (कइयों का मानना है ये घराने ''घरों में कलीसियाएं'' थे)।

हेरोदियोन (आयत 11क)

अरिस्तुबुलुस और नरकिस्सुस के बीच में लगा नाम दिलचस्प है। पौलुस ने कहा, ''मेरे कुटुम्बी हेरोदियोन को नमस्कार'' (आयत 11क)। ''हेरोदियोन'' से उसके बदनाम हेरोदेस के परिवार से कुछ सम्बन्ध का संदेश मिलता है। यह अनुमान लगाना दिलचस्प है कि उस पतित परिवार से जुड़े किसी व्यक्ति के पास सुसमाचार पहुंचा था नहीं।[39] शायद हेरोदियोन एक दास था या मुक्त दास जिसने अपने स्वामी का नाम अपने नाम के साथ लगा दिया था।

त्रूफैना और त्रूफोसा और पिरसिस (आयत 12क)

आयत 12 में प्रभु के लिए काम करने वाली तीन महिलाओं का नाम है: ''त्रूफैना और त्रूफोसा को जो प्रभु में परिश्रम करती हैं, नमस्कार। प्रिय पिरसिस को जिस ने प्रभु में बहुत परिश्रम किया, नमस्कार।'' ''त्रूफैना और त्रूफोसा'' नामों में इस बात का संकेत है कि वे दोनों बहनें थीं या जुड़वां थीं। ''दोनों नाम एक मूल शब्द से निकले हैं जिसका अर्थ 'कोमलता से, विलासिता में रहना।' ''उनके नामों का अनुवाद ''कोमल'' और ''सुन्दर'' हो सकते हैं।[40] ''परिश्रम करती हैं'' और ''बहुत परिश्रम किया'' *kopiao* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''थककर चूर होने तक परिश्रम करना'' है।[41] पौलुस के चेहरे पर यह कहते हुए मुस्कुराहट आई होगी, ''कोमल और

सुन्दर को नमस्कार, जिन्होंने, अपने नामों के विपरीत, चूर होने तक काम किया है।''

त्रूफैना और त्रूफोसा के विवरण में वर्तमान काल का इस्तेमाल किया गया है जबकि ''पिरसिस ... जिसने प्रभु में बहुत परिश्रम किया'' कहने के लिए भूतकाल त्रिदंत का इस्तेमाल हुआ है। इससे यह संकेत मिल सकता है कि पिरसिस बुज़ुर्ग थी और उसके अधिक सक्रिय दिन बीत चुके थे। प्रभु कालांतर में वफ़ादारी से की गई सेवा को कभी नहीं भूलता (देखें प्रकाशितवाक्य 14:13)।

रूफुस और उसकी माता (आयत 13)

सूची का अगला नाम नये नियम में कहीं और भी मिलता है: ''रूफुस को जो प्रभु में चुना हुआ है'' नमस्कार (आयत 13क)। मरकुस ने जब शमौन कुरेनी की कहानी बताई कि उसने किस प्रकार यीशु का क्रूस उठाया था तो उसने शमौन को ''सिकन्दर और रूफुस का पिता'' बताया था (मरकुस 15:21), जो इस बात का संकेत है कि उसके पाठकों को मालूम था कि सिकन्दर और रूफुस कौन थे। आम तौर पर यह माना जाता है कि सुसमाचार का मरकुस का विवरण रोमियों को आकर्षित करने के लिए लिखा गया था। सम्भवतया मरकुस 15 वाला रूफुस रोमियों 16 वाला रूफुस ही है।

पौलुस ने ''उस [रूफुस] की माता जो मेरी भी है'' (रोमियों 16:13ख) को भी सलाम भेजा। पौलुस उस स्त्री को याद कर रहा था जो उसके लिए मां जैसी थी। माताएं क्या करती हैं? वे आपको खाना खिलाती, आपको कपड़े पहनाती, आपको सहारा देती हैं परन्तु वे इससे भी अधिक करती हैं: वे आपसे प्रेम करती हैं, आपको शांति देती हैं और आपको विशेष होने का अहसास कराती हैं। वर्षों से कई भक्त स्त्रियां मेरे लिए मां जैसी रही हैं: मेरे कॉलेज के समय में मारथा मौज़ियर, ग्रेट ओक्लाहोमा नगर में मेरे आरम्भिक पूर्णकालिक कार्य के दौरान एडिथ बीवर वर्षों से मेरी सासू मां एडिथ (नानी) डिब्लस और कई और स्त्रियां। बूढ़ी स्त्रियां सुसमाचार सुनाने वालों की कितनी बड़ी सहायता और प्रोत्साहन कर सकती हैं!

रूफुस की माता ने पौलुस की सहायता कब की? यदि मरकुस 15:21 वाला शमौन प्रेरितों 13:1 वाला शमौन है,[42] तो उसकी पत्नी अन्ताकिया में पौलुस के काम करने के समय उसके लिए माता जैसी होगी (प्रेरितों 11:25, 26)।

असुंक्रितुस, फिलगोन, हिर्मेस, पत्रुबास, हिरर्मास और भाई (आयत 14)

व्यक्तिगत सलामों की सूची नामों के दो समूहों के साथ समाप्त होती है। आयत 14 में हम पढ़ते हैं, ''असुंक्रितुस और फिलगोन और हिर्मेस और पत्रुबास और हिरर्मास[43] और उन के साथ के भाइयों को नमस्कार।'' कइयों का मत है कि ये लोग ''घरों की कलीसिया'' के सदस्य थे। यदि ऐसा है तो जिनके नाम बताए गए हैं वे उस मण्डली के सदस्य थे जिससे पौलुस वाकिफ़ था।

फिलुलुगुस, यूलिया, नेर्युस और उसकी बहन, उलुम्पास और पवित्र लोग (आयत 15)

आयत 15 कहती है, ''फिलुलुगुस44 और यूलिया और नेर्युस और उस की बहिन, और उलुम्पास और उन के साथ के सब पवित्र लोगो को नमस्कार।'' फिर से माना जाता है कि यह आयत ''घर की कलीसिया'' की ही बात करती है। फिलुलुगुस और यूलिया दोनों पति-पत्नी हो

सकते हैं, या शायद वे भाई-बहन थे।

अन्य (आयत 16क)

कई लोगों के नाम लिखने के बाद, पौलुस ने यह कहते हुए अपने व्यक्तिगत सलाम खत्म किए, ''पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो'' (आयत 16क)। यह चुम्बन करने की आज्ञा नहीं थी। उस ज़माने में चुम्बन के साथ अभिवादन करना आम बात थी (देखें 1 कुरिन्थियों 16:20; 2 कुरिन्थियों 13:12; 1 थिस्सलुनीकियों 5:26; 1 पतरस 5:14)।[45] आम तौर पर पुरुष पुरुषों को चुम्बन करते थे और स्त्रियां स्त्रियों का चुम्बन करती थीं। चुम्बन का अर्थ होता था, ''मैं तुम्हें ग्रहण करता/करती हूं कि हम निकट हैं।'' संसार के कुछ भागों में आज भी गाल पर चुम्बन देकर अभिवादन किया जाता है। पौलुस की आज्ञा यह नहीं थी कि वे चुम्बन करें बल्कि यह थी कि उनके अभिवादन ''पवित्र'' होने चाहिए। हम ''गम्भीर'' और ''निष्कपट'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल कर सकते हैं। उनके अभिवादन केवल दिखावे के लिए नहीं थे बल्कि उस प्रेम और लगाव की सच्ची अभिव्यक्ति थे जो वे एक दूसरे से करते थे। अमेरिका में हम कह सकते हैं, ''एक दूसरे को पवित्र हैलो, पवित्र हाथ मिलाने, और पवित्र गले मिलने से सलाम करो।''

यूहन्ना ने लिखा, ''मित्रों के नाम ले लेकर नमस्कार कह देना'' (3 यूहन्ना 15) और रोमियों 16:3-15 में पौलुस ने यही किया। जिसके नाम दिए गए हैं उनमें से अधिकतर को ''बाइबल के अप्रसिद्ध पात्र'' कहा जाता है, परन्तु वे पौलुस के लिए ''अप्रसिद्ध'' नहीं थे। वे उसके लिए अपनी आंखों, अपने हाथों और पांवों की तरह ही प्रिय थे। कहा जाता है कि ''हर व्यक्ति जिसके सम्पर्क में आप अपनी सेवकाई में आते हैं आपके मन पर छाप छोड़ जाता है।''[46] रोम में पौलुस के मित्रों ने उस पर न मिटने वाली छाप छोड़ी थी।

और कहीं के मित्र (16:16ख, 21-23)

अन्य मण्डलियां (आयत 16ख)

यह कहने के बाद कि ''आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो'' पौलुस ने आगे कहा, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (आयत 16ख)। नये नियम में जब ''कलीसिया'' शब्द बहुवचन में मिलता है तो इसका अर्थ स्थानीय मण्डलियां होता है। ''मसीह की कलीसियाएं'' उपयुक्त नाम नहीं है, परन्तु एक विवरणात्मक नाम है। इस स्थिति में ''मसीह की'' का अर्थ है ''जो मसीह की हैं।'' ''मसीह की कलीसियाओं'' वाक्यांश का अर्थ वे मण्डलियां हैं जो मसीह की हैं (इस वाक्यांश की तुलना मत्ती 16:18 में ''अपनी कलीसिया'' वाक्यांश से करें)। रोमियों 16:16 के अन्तिम भाग को व्यक्त करने का एक और ढंग होगा ''मसीह की सभी कलीसियाएं (मण्डलियां) तुम्हें सलाम कहती हैं।''

''मसीह की *सारी* कलीसियाओं'' का अर्थ हर वह मण्डली हो सकती है जिसके साथ पौलुस का सम्पर्क था। शायद उसने उन्हें किसी दिन रोम में जाने की अपनी इच्छा बताई थी (जैसे इफिसुस में जाने की [प्रेरितों 19:21]) और उन्होंने उत्तर दिया था, ''जब जाओगे, तो उन्हें हमारा सलाम देना।'' एक और सम्भावना यह है कि जिन लोगों ने यरूशलेम जाने के लिए पौलुस के साथ

चलना था (देखें प्रेरितों 20:4) वे कुरिन्थुस में पहले ही इकट्ठे हो गए थे और उन मण्डलियों की ओर से सलाम भेज रहे थे जिन्होंने उन्हें भेजा था। यह भी सम्भावना है कि परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रेरित होने के कारण पौलुस को विश्वास था कि वह पूरे भाईचारे के लिए बोलने के योग्य है।

अन्य लोग (आयतें 21-23)

पत्र में अन्तिम शब्दों में कुरिन्थुस के लोगों की ओर से सलाम शामिल है:

> तीमुथियुस मेरे सहकर्मी का, और लूकियुस और यासोन और सोसित्रुस मेरे कुटुम्बियों का, तुम को नमस्कार।
>
> मुझे पत्री के लिखनेवाले तिरतियुस का प्रभु में तुम को नमस्कार।
>
> गयुस का जो मेरी और कलीसिया का पहुनाई करनेवाला है उसका तुम्हें नमस्कार (आयतें 21-23)।

इन आयतों पर चर्चा हम अगले पाठ में करेंगे, परन्तु मैं यह दिखाने के लिए कि आरम्भिक कलीसिया में प्रेम किस प्रकार आगे पीछे को बहता था उनका नाम बताना चाहता हूं।

सारांश

यदि आप ने इस मुद्रित प्रस्तुति पर विचार किया और इसके हर ''यदि,'' ''हो सकता है,'' ''सम्भवतया,'' और ''सम्भावना'' को लाल पैन से चिह्नित किया है, तो आपको इसके पृष्ठ ऐसे लगेंगे जैसे वे किसी खतरनाक फुंसी से निकले हों। क्या हमारे वचन पाठ में कुछ ऐसा है जिसके बारे में हम अनुमान न लगा सकते हों? हां इन आयतों से जिनका हमने अभी-अभी अध्ययन किया है कई निर्विवाद सबक सीखे जा सकते हैं:

- *आरम्भिक कलीसिया में विभिन्नता प्रभावशाली है।* अधिकतर नाम यूनानी हैं, परन्तु सूची में यहूदी नाम (हेरोदियोन, अपिलेस) और लातीनी नाम (अम्पलियातुस, उरिबानुस) शामिल हैं। सूची में समाज में ऊंचा स्थान रखने वाले और निचले स्तर के, धनवान और निर्धन, जवान और बूढ़े, अविवाहित और विवाहित, दास और स्वतन्त्र पुरुषों और स्त्रियों का नाम है। ऐसे अलग-अलग तरह के लोगों का समूह इकट्ठा कैसे रहा? वे सब ''मसीह में'' थे यानी प्रभु में उनकी साझी पहचान थी।
- *स्त्रियों के महत्व* पर ज़ोर दिया गया है। पहली सोलह आयतों में उनियासी लोगों में से, बारह स्त्रियां हैं और उनमें से दस का नाम बताया गया है। इससे वे लोग सदा के लिए खामोश हो जाने चाहिए जो पौलुस को ''स्त्रियों से घृणा करने वाला'' के रूप में दिखाना चाहते हैं।
- *प्रभु के लिए काम करने का महत्व* स्पष्ट है। पौलुस ने साथी काम करने वालों की बात की, जिन्होंने प्रभु के लिए परिश्रम किया था और जिन्होंने उसकी सहायता की थी। हम उनमें से अधिकतर को नहीं जानते कि वे कौन थे, परन्तु प्रभु जानता है। कइयों को उनके परिश्रम जिनके नाम बताए गए हैं ''साधारण लोगों द्वारा किया गया साधारण

काम'' लग सकता है, परन्तु प्रभु के लिए यह ''असाधारण'' था।

- *पौलुस के मित्रों की संख्या और विविधता का स्पष्ट याद दिलाना* हम को प्रभावित करने वाला होना चाहिए। पौलुस को कई बार कठोर और बेरहम दिखाया जाता है। उसकी सूची उसे ''आत्मा जीतने वाला होने के साथ-साथ मित्र बनाने वाला'' दिखाती है।[47] पौलुस के सब मित्र उसके लिए महत्वपूर्ण थे।

बैंजामिन फ्रैंकलिन ने कहा है, ''पिता खज़ाना है; भाई शांति है; [और] मित्र दोनों है।''[48] मित्र *होना* आवश्यक है और मित्र *रखना* आवश्यक है। मित्र होने के सम्बन्ध में मेरे ध्यान में KJV के अनुवाद वाला नीतिवचन 18:24क रहता है: ''जिस आदमी के मित्र होते हैं उसे अपने आपको मित्रतापूर्वक दिखाना आवश्यक है।'' मित्र रखने के सम्बन्ध में, मित्र जैसा होना आवश्यक है जो अच्छे या बुरे समयों में ''सब समयों में प्रेम रखता है'' (नीतिवचन 17:17)।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

जब आप इस प्रवचन का इस्तेमाल करें तो आप अन्त में देख सकते हैं कि हमारे बहुत से सांसारिक मित्र हों या न, परन्तु परमेश्वर और यीशु हमारे मित्र हैं। यही सबसे आवश्यक है। यीशु ने कहा, ''जो आज्ञा मैं तुम्हें देता हूं यदि उसे मानो तो तुम मेरे मित्र हो'' (यूहन्ना 15:14)। अपने सुनने वालों को याद दिलाएं कि यीशु ने हमें क्या करने की आज्ञा दी है (देखें मरकुस 16:16; लूका 9:26; 13:3)।

मसीही बनने का एक सम्भावित निमन्त्रण यह ध्यान दिलाने से आरम्भ किया जा सकता है कि पौलुस ने अपने अधिकतर मित्रों का परिचय केवल एक छंद या वाक्यांश से करवाया। अपने सुनने वालों से पूछें, ''यदि आपके जीवन के बारे में संक्षेप में बताना हो, तो किन शब्दों में बताया जा सकता है?''

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षक ''आप 'हैलो' कैसे कहते हैं?'' और ''जिन लोगों से आप मिलना पसन्द करेंगे'' हो सकते हैं। जब लुक हार्टमैन ने रोमियों 16 पर संदेश दिया तो उसने ''जब नाम पुकारा जावे'' गीत से लेते हुए ''जब पौलुस ने नाम पुकारा'' पर प्रचार किया।[49] एक और सम्भावित शीर्षक ''पौलुस के मित्रों कि फोटो एलबम है।'' कुछ प्रसिद्ध चेहरे दिए गए हैं परन्तु अधिकतर फोटो से हमें यह इच्छा होती है कि काश हमारे पास और जानकारी होती।

पाठों को जान-बूझकर संक्षिप्त रखा गया है। आप पौलुस की सूची पर टिप्पणियों को बढ़ाकर उनकी प्रासंगिकता पर अधिक समय देना चाहें तो दे सकते हैं। अन्य संभावनाओं में गुमनाम (अज्ञात) दास होने का महत्व आगंतुकों का गर्मजोशी से स्वागत करने का महत्व और कलीसिया में घर का (परिवारिक) माहौल की आवश्यकता पर ध्यान दिलाना शामिल है। यदि आप इस ढंग का इस्तेमाल करने का फैसला लेते हैं तो आप अपनी प्रस्तुति को ''पौलुस की सूचियों'' और ''सम्भावित सबक'' में बांट सकते हैं।

रोमियों 16:3-5 का इस्तेमाल प्रिसकिल्ला और अकविल्ला पर पात्र अध्ययन के सम्बन्ध में किया जा सकता है। विलियम बार्कले ने लिखा है, ''नये नियम में प्रिसका और अकविला जैसी

आकर्षक जोड़ी नहीं है।''[50] आप चाहें तो फीबी का पात्र-चित्रण दे सकते हैं (आयतें 1, 2)।

यदि आप रोमियों 16 को एक ही पाठ में बताना चाहें तो आप मेरे भाई कोय का ढंग अपना सकते हैं। उसने अपने प्रवचन को ''नायक और खलनायक'' नाम दिया।[51] नायक वे लोग थे जो सलाम भेज और ले रहे थे। खलनायक वे थे जिनकी बात 17 से 20 आयतों में की गई है।

टिप्पणी

[1]इसलिए यह मान लिया जाता है कि मित्र सच्चे मित्र को कहा गया है, जो ''परमेश्वर में हमें प्रोत्साहित करते हैं'' (देखें 1 शमुएल 23:16)। [2]परमेश्वर के आत्मिक परिवार (कलीसिया) की महिला सदस्य ''बहनें'' हैं, परन्तु किसी महिला मसीही के लिए नये नियम के यूनानी धर्मशास्त्र में इस शब्द का इस्तेमाल कहीं नहीं हुआ। (रोमियों की पुस्तक में केवल यहीं यह मिलता है।) आम तौर पर ''भाइयों'' का इस्तेमाल पुरुषों तथा स्त्रियों दोनों के लिए सामान्य अर्थ में किया जाता है। (रोमियों की पुस्तक में आम तौर पर ''भाई'' और ''भाइयों'' शब्द मिलते हैं।) [3]रोम को अपने पत्र में पौलुस ने परमेश्वर के लोगों के लिए विभिन्न शब्दों का इस्तेमाल किया, परन्तु ''कलीसिया'' (*ekklesia*) शब्द का इस्तेमाल उसने यहां पहली बार किया। अध्याय 16 में उसने पांच बार इस शब्द का इस्तेमाल किया। [4]कुरिन्थुस पश्चिम की ओर एक बन्दरगाह (लैक्ज़ियूम) और पूर्व की ओर बन्दरगाह (किंख्रिया) के साथ एक स्थल संयोजन पर था। [5]रोमी सरकार की सरकारी पत्राचार के लिए डाकसेवा थी परन्तु यह आम लोगों के इस्तेमाल के लिए नहीं थी। [6]उस ज़माने में कुछ गलियों के नाम होते थे और घरों की पहचान के लिए नम्बर नहीं होते थे। मौखिक उद्देश्यों के उदाहरण प्रेरितों 9:11; 10:5, 6 में मिलते हैं। प्राचीन पत्राचार में लिखित निर्देशों के नमूने एस.आर.लेवलिन ''डायरेक्शंस फ़ॉर द डिलिवरी ऑफ़ लैटर्स एंड द एपिस्टल ऑफ़ सेंट पॉल,'' *एंसिएंट हिस्ट्री इन ए माडर्न यूनिवर्सिटी,* अंक 2, *अर्ली क्रिश्चियनिटी, लेट एंटिक्विटी एंड बियांड,* संपा. टी. डब्ल्यू. हिलर्ड, आर. ए. कियरसली, सी. ई. वी. निक्सन, एंड ए.एम.नॉब्बस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1998), 184-94. [7]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: समुएल बैगस्टर एंड सन्स, 1971), 344, 203. [8]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 529. ''प्रभु में,'' ''मसीह में'' और ''मसीह यीशु में'' हमारे वचन पाठ में ग्यारह बार मिलते हैं यानी पौलुस के लिए यह एक आवश्यक अवधारणा थी। [9]लुदिया नाम की एक व्यापारी स्त्री (प्रेरितों 16:14) व्यवसाय के लिए एशिया से मकदुनिया को जाती थी। [10]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गाड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 392.

[11]कई बार कहा जाता है कि *diakonos* का स्त्री लिंग रूप रोमियों 16:1 में इस्तेमाल किया गया है; परन्तु जैक. पी. लुइस के अनुसार *diakonos* का कोई स्त्रीलिंग रूप नहीं है। उसने कहा कि यह हमें एक ''न इनकार किया जाने वाला यूनानी शब्द'' है (जैक. लुइस, एक्सिजेसिस ऑफ़ डिफिकल्ट पैसेज [सरसी, आरकैंसा: रिसोर्सिस पब्लिकेशंस, 1988], 105). [12]कइयों का कहना है कि ''*कलीसिया की* सेविका'' वाक्यांश का इस्तेमाल इस बात का प्रमाण है कि वह आधिकारिक डीकनेस थी, परन्तु मैं परमेश्वर का भय रखने वाली सैकड़ों स्त्रियों को जानता हूं जो बिना किसी प्रकार का आधिकारिक पद पाए ''कलीसिया की सेविकाएं'' थीं। [13]यदि 1 तीमुथियुस 3:11 डीकनेश बनने की योग्यताओं की की सूची है तो आश्चर्यजनक ढंग से यह संक्षेप है। कुछ अठारह साल की अविवाहित स्त्रियां उन मापदण्डों को पूरा कर सकती हैं। [14]लूईस, 108. तीसरी शताब्दी के इस सीरियन दस्तावेज़ को *Didascalia Apostolorum* कहा जाता है। [15]वही, 109. [16]स्टॉट, 394. इस बात का कुछ प्रमाण है कि रोम को पौलुस का पत्र विभिन्न रूपों में बांटा गया था, परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि अध्याय 16 का वितरण कभी 1 से 15 से अलग किया गया हो। [17]पौलुस का एक मात्र और पत्र जिसमें उसने ऐसे ही अभिवादन भेजे कुलुस्से की कलीसिया के नाम था (देखें कुलुस्सियों 4:15, 17)। कुलुस्से और रोम दोनों ऐसे नगर थे जिसमें पौलुस नहीं गया था। [18]स्टॉट, 392; एमिल ब्रनर, *दि लैटर टू द रोमन्स-ए कमैंट्री* (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1959), 126 से उद्धृत करते हुए। [19]प्रिसकिल्ला और अक्विल्ला का उल्लेख नये नियम में छह बार मिलता है (प्रेरितों 18:2, 18, 26; रोमियों 16:3; 1 कुरिन्थियों 16:19; 2 तीमुथियुस 4:19)। इनमें से चार हवालों में प्रिसकिल्ला का नाम पहले दिया गया है।

[20]हमें नहीं मालूम की वह पौलुस के मिलने के समय मसीह थे या पौलुस ने उन्हें बदला।

[21]सुलेमान का दलान या ओसारा यरूशलेम के मन्दिर के अहाते में अन्यजातियों के आंगन में था। [22]क्योंकि अधिकतर निजी घरों की तीन मंज़िलें नहीं होती थीं, सम्भवतया यह रोम के किसी कॉम्पलैक्स या रोम जैसे किसी नगर जैसा था। (त्रोआस एक रोमी कालोनी थी।) [23]डेल हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 21 दिसंबर 2003 को दिया गया प्रवचन। [24]इस पुस्तक में आगे ''अपने घर में कलीसिया आरम्भ कैसे करें'' पढ़ें। [25]KJV में ''अखाया के पहले फल'' है (जहां कुरिन्थुस था) परन्तु एक और जगह पौलुस ने ''स्तिफनास के घराने'' को ''अख्याह के पहले फल'' कहा है (1 कुरिन्थियों 16:15)। रोमियों 16:5 के सम्बन्ध में हस्तलेख का प्रमाण ''आसिया के पहले फल'' का पक्ष लेता है। KJV की भाषा का पक्ष लेने वाले लोग सुझाव देते हैं कि इपैनितुस स्तिफनास के घराने में बपतिस्मा लेने वाला पहला व्यक्ति था। [26]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 441. [27]यह पवित्र शास्त्र का प्रश्न है कि पौलुस ने ''तुम्हारे लिए ... परिश्रम किया'' कहा या ''हमारे लिए ... परिश्रम किया'' (देखें KJV)। यदि NASB की भाषा सही है, तो यह ध्यान देना दिलचस्प है कि पौलुस को रोम में किए गए मरियम के काम का पता था। [28]अमेरिका में कुछ लोगों के नाम ऐसे होते हैं जो पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं, जैसे बॉबी, टैरी और बैना। शायद आपके देश में भी ऐसे नाम होंगे। [29]इसके अलगा अंग्रेज़ी शब्द ''kins*men*'' यह प्रभाव देगा कि ये दो पुरुष थे, परन्तु यूनानी शब्द के अनुवाद ''kins*man*'' में पुरुष और स्त्री दोनों शामिल थे। [30]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन 'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 342.

[31]एफ़. एफ़. ब्रूस, *दि लैटर ऑफ़ पॉल टू द रोमन्स,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 259. [32]विलियम बार्कले, *दि लैटर टू द रोमन्स,* संशो. संस्क., दि डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1975), 212. [33]जे.बी.लाइटफुट, *सेंट पॉल 'स एपिस्टल टू द फ़िलिपियंस,* संशो., चौथा संस्क., (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1879), 177. [34]मैरिल एफ़. अंगर, *दि न्यू अंगर 'स बाइबल डिक्शनरी,* संपा. आर.के.हैरिसन, संशो. व संस्क. (शिकागो: मूडी प्रैस, 1988), 1218. [35]वाइन, 35-36. [36]ब्रूस, 259. [37]''मुक्त दास'' पूर्व गुलाम होता था जिसे स्वतन्त्रता मिल गई थी। [38]ब्रूस, 260. [39]पौलुस ने बाद में कोशिश की परन्तु हेरोदेस के परिवार से एक व्यक्ति को परिवर्तित करने में नाकाम रहा (राजा हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय) (प्रेरितों 25:13-26:30)। [40]मौरिस, 536.

[41]बार्कले, 214. [42]यह सम्भावना कि ऐसा ही था इस तथ्य से बढ़ जाती है कि कुरेने के पुरुष उन लोगों में से थे जिन्होंने अन्ताकिया में अन्यजातियों के पास सबसे पहले सुसमाचार पहुंचाया (प्रेरितों 11:19-21)। [43]''हिरमेस'' और ''हिर्मास'' दोनों लगभग एक जैसे लगते हैं, परन्तु रोपर और रिप्पर की तरह दोनों अलग-अलग नाम हैं। ''हिरमेस'' यूनानी देवता का नाम था जिसे रोमी लोग मरकरी कहते थे; यह गुलामों का आम नाम भी होता था। ''हिर्मास'' किसी लम्बे, अज्ञात नाम का लघु रूप माना जाता है। [44]''फिलुलुगुस'' का अर्थ है ''शब्दों का प्रेमी।'' [45]उस ज़माने में हाथ मिलाने का इस्तेमाल आम तौर पर किसी समझौते को पक्का करने के लिए किया जाता था (देखें गलातियों 2:9)। [46]हार्टमैन. [47]वारेन डब्ल्यू. विर्यसबे, *दि बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक. 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 565. [48]लियोनार्ड लुईस लेविन्सन, *वेबस्टर 'स यनआफ़्रेड डिक्शनरी* (न्यू यॉर्क: कोलियर बुक्स, 1967), 92 में उद्धृत। [49]लियूक हार्टमैन, ईस्टसाइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 8 जनवरी 2006 को दिया गया प्रवचन। [50]बार्कले, 208.

[51]कोय रोपर, ऐट वालनट ग्रोव चर्च ऑफ़ क्राइस्ट वाल्नट ग्रोव, टेनिसी, 3 दिसंबर 2000 को दिया गया प्रवचन।